33. अनुभव-लेखन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन में उसे अनेक प्रकार के अनुभवों से गुजरना पड़ता है। अपने विचारों, भावों एवं दृष्टिकोण को लिखित रूप देना अनुभव-लेखन कहलाता है।

शिक्षण-संकेत

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को अनुभव-लेखन के बारे में विस्तार से समझाएँ।
- ❖ उन्हें अनुभव-लेखन की परिभाषा से अवगत करवाएँ।
- ❖ अनुभव लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातों के बारे में बताएँ।
- ❖ पाठ पृष्ठ 259-260 पर दिए गए अनुभव-लेखन के उदाहरण पढ़वाएँ एवं समझाएँ।
- ❖ उन्हें श्यामपट्ट पर कुछ अन्य उदाहरण लिखकर दिखाएँ।
- ❖ छात्रों को अपने अनुभव लिखने के लिए प्रेरित करें।
- ❖ यह सुनिश्चित करें कि सभी छात्र विषय को सही प्रकार से समझ गए हैं।
- ❖ दिया गया अभ्यास करवाएँ एवं यथासंभव सहायता करें।